रेपका के ग्राहक :

रेपका उत्पाद अर्थात पहिया, धुरा और पहिया सेटों के भारतीय रेल मुख्य ग्राहक हैं जिसे परेषितीवार निम्नानुसार गिना जा सकता है -

क्षेत्रीय रेल

1. मध्य रेलवे 2. पूर्व रेलवे 3. पूर्व तटीय रेलवे 4. पूर्व मध्य रेलवे 5.उत्तर रेलवे 6. पूर्वोत्तर रेलवे 7. उत्तर सीमांत रेलवे 8. उत्तर पश्चिम रेलवे 9. उत्तर मध्य रेलवे 10. दक्षिण रेलवे 11. दक्षिण मध्य रेलवे 12. दक्षिण पश्चिम रेलवे 13. दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे 14. दक्षिण पश्चिम रेलवे 15. पश्चिम रेलवे 16. पश्चिम मध्य रेलवे

उत्पादन ईकाइयां एवं अन्य ग्राहक

17. सवारी डिब्बा कारखाना 18. रेल डिब्बा कारखाना 19. चित्तरंजन इंजन कारखाना 20. डीजल आधुनिकीकरण कारखाना 21. भेल 22. डीजन इंजन कारखाना 23. वैगन निर्माता

- गैर रेलवे ग्राहक - भारतीय फर्म और विदेशी ग्राहकों को मिलाकर।
- बाजार क्षेत्र - मुख्य रूप से भारतीय रेल और बहुत सारे गैर रेलवे ग्राहक।

कारखाना की स्थापना के 32 सालों से रेपका के उत्पादों का कोई ऑन लाइन विफलता नहीं हुई है।

गैर रेलवे ग्राहकों और समुद्रपारीय ग्राहकों की सूची संलग्न है।

निर्यात बाजार - वैश्विक परिदृश्य :

रेलवे के लिए पहियों की वैश्विक माँग इस दशक में 4.5 से 5 मिलियन तक स्थिर हो गई है। फोर्जिंग एवं कास्टिंग प्रक्रिया द्वारा पहियों का निर्माण किया जाता है। ढले हुए पहियों का उपयोग खासतौर पर माल डिब्बों में किया जाता है। रेल पहिया कारखाना (रेपका) का मुख्य रणनीति यॉंत्रिक और थर्मल गुणों वाले फोर्ज पहियों के साथ-साथ कास्ट पहियों को विकसित करने की है। इस दृष्टि से, रेल इंजनों के लिए माइक्रो मिश्रित पहिए का सफलतापूर्वक विकास की एक बड़ी उपलब्धी पहले ही हासिल की जा चुकी है, जिसके नियमित उपयोग के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा वर्ष 2002 में मंजूरी दे दी गई। इसके आगे, टीसी व एम/सी दोनों अनुप्रयोगों के लिए ईएमयू पहियों का रेलवे में नियमित उपयोग के लिए आर डी एस ओ द्वारा वर्ष 2016 में अनुमोदन दे दिया। रेपका अपेक्षित रसायन वाले 725 मि.मी. से 1098 मि.मी. का कास्ट पहिया बनाने की क्षमता रखता है। आने वाले डिजाइन केंद्र (डीडीटीसी) से रेपका फोर्ज्ड पहिया के समक्ष कास्ट पहिया के निर्माण का मुख्य केंद्र हो जाएगा, इस प्रकार दक्षिण एशिया और अफ्रीकी देशों के बाजारों में कब्जा करने की क्षमता रखता है .

पहिए की वैश्विक माँग

(आई आर ई ई- 2015 में संकलित डाटा)

देश	माँग
उत्तरी अमेरिका	11,00,000
रूस	18,50,000
चीन	7,50,000
यूरोप	5,50,000
भारत	3,25,000
विश्व के बाकी देश (जापान एवं दक्षिण कोरिया को मिलाकर)	4, 00, 000

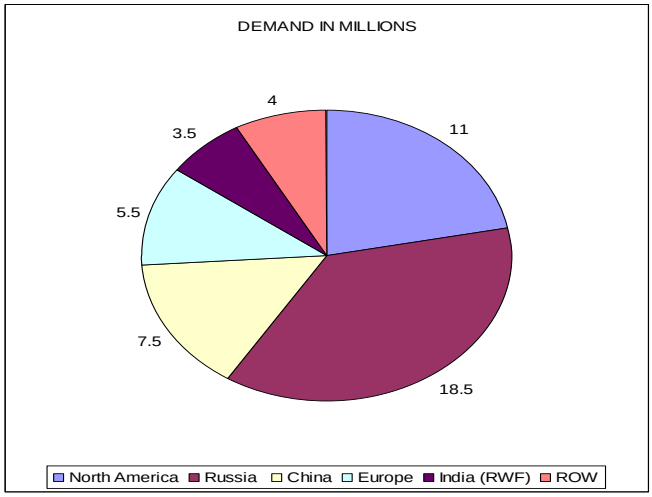

एस डबल्यू ओ टी विश्लेषन से पता चलता है कि रेपका की ताकत उसके द्वारा अच्छे गुणवत्ता वाले उत्पादों को समय पर उपलब्ध कराने और फोर्ज किए गए पहियों को आयातित करने की जगह पर उसकी बराबरी करने वाले लोको, एल एच बी, एवं ई एम यू जैसे कास्ट स्टील पहियों को विकसित करने के लिए नवीन उतपादों/सेवा उपायों का प्रयोग कर भारतीय रेल की लगातार बढ़ती माँगों को पूरा करने में माँगों को पूरा करने में निहित हैं।

रेपका की कमजोरी यह है कि यह अपने डिजाइन की वैधता और कारखाने में विकसित पहिए को मान्यता देने में सक्षम नहीं है। पहियों के लिए परिकल्पित अभिकल्प विकास एवं परीक्षण केंद्र हेतु राइट्स को दिए गए संविदा को पूरा हो जाने पर इस कमी को पूरा किया जा सकेगा।

भारतीय रेल में उच्चतर धुरा लोड से लेकर उच्चतर गति के विभिन्न चल स्टॉकों को चलाए जाने से रेपका को अपने उत्पादों में विविधता लाने का अवसर मिल रहा है। छपरा के नए पहिया कारखाना के कारण निर्माण क्षमता का भरपूर लाभ उठाने का भी अवसर प्राप्त हो रहा है ।

रेपका को मुख्य चुनौती छपरा, बिहार में समान प्रकार के पहिया कारखाने की स्थापना से है। इससे रेपका की क्षमता प्रभावित होगी। दूसरी तरफ चीन और युक्रेन आदि से सस्ते पहियों एवं धुरों की उपलब्धता भी चुनौती माना जा रहा है ।